उत्तर पुस्तिका भाग–8

व्याकरण वृक्ष–8

पाठ–1 भाषा, बोली, लिपि तथा व्याकरण

[Language, Dialect, Script and Grammar]

(क) 1. व्याकरण किसी भी भाषा के लिए इसलिए आवश्यक है क्योंकि यह भाषा को शुद्‌ध रूप से बोलने, लिखने और पढ़ने के नियमों का ज्ञान कराता है।

2. हिंदी भाषा की तीन विशेषताएँ हैं–
   - (i) हिंदी भारत में लगभग चालीस करोड़ निवासियों की मातृभाषा तथा लगभग तीस करोड़ लोगों की संपर्क भाषा है।
   - (ii) इसके उच्चारण व लेखन में एकरूपता है।
   - (iii) संपूर्ण विश्व में हिंदी भाषा में सबसे अधिक फ़िल्में बनाई जाती हैं।

3. भाषा की व्युत्पत्ति 'भाष्' धातु से हुई है।

4. विदेशी भाषाएँ–जापानी, स्पेनिश; भारतीय भाषाएँ– असमिया, तेलुगु।

5. अंगिका, मगही, भोजपुरी हिंदी की बिहारी उपभाषा के अंतर्गत आती हैं।

6. हिंदी को भारतीय संघ की राजभाषा का दर्जा 14 सितंबर, 1949 को मिला।

7. भाषा के शुद्‌ध रूप को प्रस्तुत करने वाला शास्त्र 'व्याकरण' है।

8. मनुष्य के हृदयगत भावों एवं विचारों को पूर्ण रूप से अभिव्यक्त करने वाले शब्दमय साधन को 'भाषा' कहते हैं।

9. किसी भी बोली को जब विस्तृत प्रदेश में बोला जाने लगता है और उसमें साहित्य-रचना की जाती है, तो वह 'उपभाषा' कहलाती है।

10. किसी क्षेत्र विशेष में बोली जाने वाली भाषा के स्थानीय रूप को 'बोली' कहते हैं। बोली व उपभाषा में यह अंतर है कि उपभाषा बोली की अपेक्षा विस्तृत होती है। इसमें साहित्य रचा जाता है। किसी भी बोली को जब विस्तृत प्रदेश में बोला जाने लगता है और उसमें साहित्य-रचना की जाती है, तो वह 'उपभाषा' कहलाती है। उदाहरणार्थ–ब्रज, मैथिली, अवधी तथा खड़ी बोली को पहले बोलियों में रखा जाता था किंतु इन्हें बोलने का क्षेत्र विस्तृत होने और इनमें साहित्य रचना होने के कारण ये उपभाषाएँ बन गईं।

11. मौखिक तथा लिखित भाषा में निम्नलिखित अंतर है–
    - (i) मौखिक भाषा में ध्वनियों की सहायता से बोलकर विचारों को प्रकट किया जाता है किंतु लिखित भाषा में ध्वनि-चिह्नों द्‌वारा ही बात को लिखकर प्रकट किया जाता है।
    - (ii) मौखिक भाषा सहज रूप से सीखी जा सकती हैं, परंतु लिखित भाषा प्रयत्नपूर्वक सीखी जाती है।
    - (iii) मौखिक भाषा के लिए यह आवश्यक है कि श्रोता (सुनने वाला) बोलने वाले के पास ही हो, किंतु टेलीफ़ोन तथा दूरदर्शन से अब वक्ता दूरस्थ लोगों से भी संपर्क साध सकता है। लिखित भाषा साहित्य तथा विज्ञान आदि की पुस्तकों के रूप में, भविष्य के लिए सुरक्षित की जा सकती है। समाचार-पत्रों द्‌वारा यह घर-घर पहुँचकर जन-जन तक के विचारों को पहुँचाती है।

(ख) 1. देवनागरी 2. रोमन 3. फ़ारसी 4. गुरुमुखी

(ग) 1. पद 2. मैथिली 3. बोली 4. राष्ट्रभाषा, राजभाषा
5. देवनागरी 6. 14 सितंबर 7. वेदों 8. अवधी 9. लिपि
10. लिखित भाषा

(घ) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(ङ) छात्र स्वयं करें।

(च) 1. गढ़वाली, कुमाऊँनी
2. अंगिका, भोजपुरी
3. अवधी, बघेली
4. मेवाड़ी, मारवाड़ी
5. ब्रज, खड़ी बोली

(छ) 1. स 2. द 3. स 4. ब

पाठ-2 वर्ण-विचार [Phonology]

(क) 1. अंत:स्थ व्यंजन 2. श, ष, स तथा ह
3. 52 वर्ण 4. आँख 5. मूल स्वर
6. जिन ध्वनियों के उच्चारण में श्वास-वायु बिना किसी रुकावट के टकराकर बाहर निकलती है, उन्हें स्वर कहते हैं।
7. जिन ध्वनियों के उच्चारण में श्वास-वायु मुख के विभिन्न भागों से टकराकर बाहर निकलती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं।
8. जिनके उच्चारण में वायु केवल नासिका से निकलती है, उन्हें अनुस्वार कहते हैं; जैसे—दंत्य।
9. ध्वनियों का उच्चारण करते समय श्वास और जिह्वा द्वारा जो यत्न किए जाते हैं, उसे 'प्रयत्न' कहते हैं।
10. स्वर तथा व्यंजन में मुख्य अंतर यह है कि स्वरों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से किया जाता है, जबकि व्यंजनों का उच्चारण स्वरों की सहायता के बिना नहीं हो सकता। स्वरों के उच्चारण में जहाँ श्वास-वायु मुख के किसी भी भाग से टकराए बिना सीधी बाहर निकलती है, तो वहीं व्यंजनों के उच्चारण में श्वास-वायु मुख के विभिन्न भागों से टकराकर बाहर निकलती है।
11. व्यंजन के मुख्य रूप से तीन भेद हैं—
(i) स्पर्श व्यंजन (ii) अंत:स्थ (iii) ऊष्म व्यंजन
12. अनुस्वार (अं) तथा विसर्ग (अ:) को अयोगवाह कहते हैं। इन ध्वनियों को न तो स्वर कहा जा सकता है और न ही व्यंजन, क्योंकि इनके उच्चारण में स्वरों की सहायता आवश्यक है। व्यंजनों की तरह इनके अंत में स्वर नहीं जुड़ते, बल्कि प्रारंभ में आते हैं अत: ये व्यंजन नहीं हैं। इसलिए हम इन्हें अयोगवाह कहते हैं क्योंकि ये योग रहित होने पर भी अर्थ का वहन करते हैं।

(ख) त् + र ; क् + ष ; श् + र ; ज् + ञ

(ग) 1. संयुक्त व्यंजन 2. दीर्घ स्वर 3. वर्णमाला
4. अनुस्वार 5. तालव्य वर्ण

(घ) 1. श्रीमती 2. बीमार 3. शंख
4. कवयित्री 5. आशीर्वाद 6. संन्यासी
7. अलौकिक 8. स्वास्थ्य 9. अत्यधिक
10. ऐतिहासिक

(ङ) 1. अनुनासिक 2. द्वित्व व्यंजन 3. प्लुत 4. दंत
5. सघोष व्यंजन

(च) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓
5. ✓ 6. ✓

पाठ-3 संधि [Joining]

(क) 1. दो निकटस्थ ध्वनियों के परस्पर मेल से जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे 'संधि' कहते हैं; उदाहरणार्थ-'मत' शब्द में 'अनुसार' शब्द मिलकर 'मतानुसार' संधि बनती है।

2. संधिस्थ वर्णों को पुन: पूर्वावस्था में लाना 'संधि-विच्छेद' कहलाता है।

3. विसर्ग (:) का किसी स्वर या व्यंजन से मेल होने पर विसर्ग में जो परिवर्तन आता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं; उदाहरणार्थ- यश: + अभिलाषी = यशोभिलाषी।

4. दो स्वरों के पारस्परिक मेल से उत्पन्न विकार 'स्वर संधि' कहलाता है जबकि व्यंजन का व्यंजन या किसी स्वर के समीप होने पर जो विकार उत्पन्न होता है, उसे 'व्यंजन संधि' कहते हैं।

5. स्वर संधि के पाँच भेद हैं-
(i) दीर्घ संधि-पर्वतारोही (ii) गुण संधि-मोक्षेच्छा
(iii) वृद्धि संधि-मातैश्वर्य (iv) यण संधि-अध्येता
(v) अयादि संधि-भावुक

6. हिंदी के संधि नियम-
(i) वर्ण-लोप - लोप वह स्थिति है, जहाँ दो ध्वनियों के मेल में एक का लोप हो जाता है; उदाहराणार्थ-यह + ही = यही ('ह्' का लोप)।
(ii) स्वर रूप परिवर्तन - हिंदी के कुछ शब्दों में संधि के समय पूर्व पद के स्वरों में बदलाव आता है; जैसे-छोटा + पन = छुटपन।
(iii) समान रूप संधि - संधि के समय भिन्न ध्वनियाँ एक समान हो जाती हैं; जैसे-खत + दर = खद्दर।

(ख) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓
6. ✗ 7. ✓

(ग) 1. यण संधि 2. वृद्धि संधि 3. गुण संधि
4. दीर्घ संधि 5. अयादि संधि

(घ) 1. व्यंजन संधि 2. विसर्ग संधि 3. स्वर संधि 4. स्वर संधि

(ङ) अध: + गति - विसर्ग, अभि + सेक - व्यंजन, सत् + जन - व्यंजन,
तत् + मय - व्यंजन, उत् + लेख - व्यंजन, दु: + कर - विसर्ग,
भो + अन - अयादि, सम् + हार - व्यंजन, रज: + गुण - विसर्ग,

मनः + ताप् – विसर्ग, दुः + चक्र – विसर्ग, ने + अन – अयादि,
नर + उत्तम – गुण, अति + आचार – यण, गण + ईश – गुण

(च) 1. स   2. अ   3. ब   4. ब
5. स   6. ब

पाठ–4 वर्तनी व्यवस्था [Spelling System]

(क) 1. आइए, अब घर चलें।
2. श्रीकृष्ण और सुदामा घनिष्ठ मित्र थे।
3. आपकी कृपा के लिए मैं आपका आभारी हूँ।
4. महादेवी वर्मा प्रसिद्ध कवयित्री थीं।
5. मैं तुम्हारी गीदड़ भभकी से डरने वाला नहीं हूँ।
6. वह अपनी पत्नी के साथ आया है।

(ख) पूजनीय, कवयित्री, आशीर्वाद, मृत्यु, परमात्मा, ब्राह्मण, ज्योत्स्ना, विशेष, जाग्रत, प्रशंसा, ज्योति, अत्यधिक, परीक्षा, स्वास्थ्य, सामग्री, जिज्ञासु, सौंदर्य, शृंगार।

(ग) उन्नति के पथ पर चलने वाला छात्र, प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व ही उठ जाता है। नित्यकर्म से निवृत्त होकर वह स्नान करता है। तत्पश्चात भगवान से प्रार्थना करता है कि वह सदैव उसका पथप्रदर्शक रहे। इसके बाद व्यायाम करना उत्तम छात्र के लिए आवश्यक है। व्यायाम के बाद थोड़ा जलपान करना हितकर होता है। उसके बाद दैनिक समाचार–पत्र भी देखना चाहिए ताकि संसार, देश, नगर तथा पड़ोस की गतिविधियों का परिचय मिल जाए। इसका ज्ञान न होने से कभी–कभी बड़ी हानि होती है।

(घ) 1. पूजनीय   2. कवयित्री   3. शृंगार   4. ज्योत्स्ना
5. स्वास्थ्य   6. प्रज्वलित   7. आविष्कार   8. संन्यासी

पाठ–5 शब्द–विचार [Morphology]

(क) 1. योगरूढ़   2. यौगिक   3. बदलता   4. तत्सम
5. पुस्तक, मोहन, गया, वह, अच्छा

(ख) 1. अंग्रेज़ी + हिंदी
2. जापानी + हिंदी
3. अरबी + फ़ारसी
4. संस्कृत + हिंदी
5. हिंदी + अंग्रेज़ी

(ग) तत्सम – उत्सव, संध्या, विवेक, प्राण, शिक्षा।
तद्भव – कोयल, खीर, माँ, कवि, खेत, दूध, माथा, आग
देशज – चूड़ी, इडली, ठठेरा, झंकार, मिर्च, चाट, ताला।
विदेशज – किताब, मज़दूर, चम्मच, पेंसिल, टिकट, विज्ञान।

(घ) 1. वे शब्द जिनका संबंध विभिन्न विषयों, व्यवसायों, विज्ञान आदि से होता है, वे तकनीकी शब्द कहलाते हैं।

2. वे शब्द पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं, जो समान या एक जैसा अर्थ प्रकट करते हैं।
3. जो शब्द सुनने और बोलने में एक जैसे लगें, परंतु उनके अर्थ भिन्न हों, वे शब्द समरूप भिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं।
4. जो शब्द भारत की विभिन्न बोलियों से हिंदी में आए हैं या आवश्यकता पड़ने पर गढ़ लिए गए हैं, वे शब्द देशज शब्द कहलाते हैं।
5. शब्दों का वर्गीकरण पाँच आधारों पर किया जाता है–
   क. स्रोत/उत्पत्ति के आधार पर
   ख. रचना बनावट के आधार पर
   ग. प्रयोग के आधार पर
   घ. अर्थ के आधार पर
   ङ. व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर
6. जब रूढ़ शब्द में कोई अन्य सार्थक शब्द या शब्द खंड जुड़ जाता है तो इस प्रकार बने शब्द को यौगिक शब्द कहते हैं। दूसरी ओर, जो यौगिक शब्द किसी विशेष अर्थ में रूढ़ हो जाते हैं, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं।

(ङ) 1. स 2. स 3. ब

पाठ–6 समानार्थी या पर्यायवाची शब्द [Synonyms]

(क) 1. द 2. द 3. ब 4. स 5. द
6. ब 7. द 8. ब 9. अ 10. द

(ख) 1. पाहुना, मेहमान 2. कर्ण, श्रवण
3. आभूषण, अलंकार 4. सती, दुर्गा
5. चाप, कमान 6. महेश, शंकर
7. शेर, केसरी 8. स्त्री, अबला
9. वृक्ष, तरु 10. तन, काया

(ग) 1. माँ के नेत्रों में जल भर आया।
2. जंगल में फलों के खूब वृक्ष थे।
3. राजा ने द्विज को दरबार में बुलाया।
4. शेर की गर्जना से सब डर गए।
5. ठंडी-ठंडी पवन चल रही थी कि अचानक चपला चमकने लगी।
6. रमा नारायण जी की भार्या हैं।
7. आसमान में पक्षी उड़ रहा है।
8. वाटिका में कोयल गा रही है।

पाठ–7 अनेकार्थी शब्द [Words with various meanings]

(क) 1. आजकल सोना बहुत महँगा हो गया है।
2. नीलिमा पीले वस्त्र पहनकर विद्यालय आई है।
3. आकाश में बादल छाए हुए हैं।
4. मंदिर पर बने कलश सूर्य की किरणों से चमक उठे थे।

5. रोता हुआ बच्चा माँ की गोद में आते ही शांत हो गया।
6. पक्षियों ने उड़ने के लिए अपने-अपने पंख फैलाए।
7. सूर्य उदय होते ही पक्षी अपने नीड़ से बाहर आकर दाने की तलाश में उड़ जाते हैं।

(ख) आकाश – नभ, शून्य स्थान
कर – हाथ, सूँड़
अलि – भँवरा, कोयल
अक्षर – आकाश, मोक्ष
खग – पक्षी, बाण
जड़ – मूर्ख, अचेतन
तीर – तट, बाण
थाती – धन, धरोहर
भूत – जीव, शव
पंथ – रास्ता, रीति
पतंग – सूर्य, पक्षी
ध्रुव – स्थिर, अचल
गुरु – श्रेष्ठ, बड़ा
कर्ण – कान, पतवार
आदि – प्रारंभ, वगैरह
कल – शोर, मशीन

(ग) 1. सेना 2. बिजली 3. जड़ 4. नभ
5. खग 6. उत्पत्ति 7. पतंग

(घ) 1. द 2. अ 3. ब 4. अ 5. अ

पाठ-8 विपरीतार्थी अथवा विलोम शब्द [Antonyms]

(क) दृश्य – अदृश्य, पक्ष – विपक्ष, भूत – भविष्य, सुर – असुर, लौकिक – अलौकिक, नूतन – पुरातन, प्रमुख – गौण, यश – अपयश, सार्थक – निरर्थक, वृद्धि – ह्रास

(ख) आस्था – अनास्था, उन्नति – अवनति, उत्तीर्ण – अनुत्तीर्ण, खंडन – मंडन, हर्ष – शोक, संधि – विग्रह, अनुराग – विराग, चंचल – स्थिर, जटिल – सरल, कृपण – उदार

(ग) 1. स 2. अ 3. ब 4. स 5. ब
6. अ 7. अ 8. स

(घ) 1. तीन 3. हानि – लाभ, जीवन – मरण, यश – अपयश

(ङ) छात्र स्वयं करें।

पाठ-9 श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द [Homophones]

(क) 1. निर्धन 2. चीर 3. आसन्न 4. चर्म 5. परिणाम
6. अनिल 7. नीड़

(ख) 1. कुल – हितेश अपने कुल का इकलौता चिराग है।
कूल – नदी के कूल पर बैठकर लोग सूर्यास्त का आनंद ले रहे थे।

2. दीप – दिवाली में लोग अपने घरों को दीप जलाकर रोशन करते हैं।
   द्वीप – द्वीप चारों ओर से जल से घिरे हुए स्थल हैं।
3. लक्ष – भारत ने पाकिस्तान के साथ हुए युद्ध में लक्ष संख्या में शत्रुओं को मार गिराया।
   लक्ष्य – मेरे जीवन का लक्ष्य है कि मैं समाजसेवा करूँ।
4. अंतर – भाषा के लिखित व मौखिक रूप में बहुत अधिक अंतर है।
   अंदर – महिला ने भिखारी को अंदर से सामान लाकर दिया।
5. धान – किसान धान की कटाई कर रहे थे।
   धान्य – हमारा देश धन-धान्य से भरपूर है।

(ग) 1. ब 2. स

पाठ-10 एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द

[Words with similar meanings]

(क) 1. पुत्र माँ की गोद में आते ही चुप हो गया।
2. वह अहर्निश कठोर परिश्रम करता है।
3. हीरा बहुमूल्य वस्तु है।
4. हमें अपने देश पर अभिमान है।
5. वह अपने गृह में प्रवेश करेगा।

(ख) 1. शंका – शक होना
   आशंका – खतरा
2. कृपा – किसी की सहायता
   दया – दीन-दुखी पर पिघलना
3. भिन्न – अलग
   विपरीत – उलटा
4. अभिमान – सच्चा गर्व करना
   अहंकार – झूठा घमंड

(ग) 1. मूर्ख – आजकल के बच्चे स्वयं को बुद्धिमान और बड़ों को मूर्ख समझते हैं।
   अनभिज्ञ – पुजारी अपने पुत्र के दुराचरण से अनभिज्ञ था।
2. ईर्ष्या – अरुण की तरक्की देखकर उसके मित्र श्रेयस को ईर्ष्या होने लगी।
   द्वेष – हमें दूसरों के प्रति द्वेष का भाव नहीं रखना चाहिए।
3. सेवा – हमें स्वार्थ की भावना से दूर रहकर समाजसेवा का कार्य करना चाहिए।
   सुश्रूषा – नर्स ने बड़ी लगन से रोगी की सुश्रूषा की।
4. पाप – धर्म के विरुद्ध कार्य करने वाले लोग पाप करने में हिचकिचाते नहीं।
   अपराध – अपराधी को उसके द्वारा किए जघन्य अपराध की सज़ा मिली।

पाठ-11 अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

[One Word Substitution]

(क) 1. अमूल्य 2. तेजस्वी 3. कामचोर 4. निरुद्देश्य
5. सहस्रबाहु 6. अनुपम 7. दुश्चरित्र

(ख) 1. युगद्रष्टा 2. निराकार 3. अज्ञेय 4. अल्पव्ययी
5. उदार 6. सर्वज्ञ 7. विश्वसनीय

(ग) 1. क्षम्य 2. अगम्य 3. सर्वज्ञ 4. दूरदर्शी 5. निरुत्तर
6. दत्तक 7. जिजीविषा

(घ) 1. ब 2. अ 3. ब 4. स 5. ब
6. अ 7. अ 8. स 9. द 10. स

पाठ–12 शब्द–निर्माण: उपसर्ग [Prefix]

(क) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓
5. ✗ 6. ✓

(ख) संस्कृत – अभि, उत्, परि, सु, सत्, दुस्, प्रति, सम्, तत्
हिंदी – अन, पर, सु, कु
उर्दू – कम, ऐन, बद, दर
अंग्रेज़ी – हेड, हाफ़, वाइस, डिप्टी

(ग) 1. दुर्गुण, निर्गुण
2. अभिमान, अपमान
3. सुकर्म, कुकर्म
4. विज्ञान, अज्ञान
5. प्रहार, उपहार

(घ)

1.	अधि	अक्ष
2.	अव	नति
3.	दुस्	शासन
4.	सु	नीति
5.	ना	पाक
6.	पुर्	आतन
7.	कु	टिल
8.	उन	चास
9.	वि	ज्ञान
10.	तत्	काल
11.	निस्	काम
12.	नि	बंध
13.	अ	मर
14.	सद्	गति
15.	सु	बोध
16.	पुनर्	जन्म
17.	अंतर्	मन

(ङ) 1. ब 2. अ 3. ब 4. स 5. ब

(च) 1. कुसंग – हमें कुसंग से बचे रहना चाहिए।
2. विज्ञान – मुझे विज्ञान और गणित दोनों पसंद हैं।
3. अनुशासन – अनुशासन, लक्ष्य और उपलब्धि के बीच का सेतु है।
4. पराधीन – पराधीन व्यक्ति पिंजरे में बंद तोते के समान होता है।

पाठ–13 शब्द–निर्माण: प्रत्यय [Suffix]

(क)	1. ✓	2. ✗	3. ✓	4. ✓	5. ✗
	6. ✗	7. ✗			

(ख)
1. साहित्य — इक
2. माया — वी
3. मिल — आवट
4. कम — आऊ
5. बच्चा — पन
6. देव — त्व
7. प्रांत — इय
8. गरीब — ई
9. भील — नी

(ग)
1. ता = सुंदरता
2. ई = रोगी
3. इक = धार्मिक
4. ता = सुंदरता
5. ईला = चमकीला
6. आलु = कृपालु

(घ)	1. अ	2. ब	3. ब	4. स	5. द
(ङ)	1. ब	2. स	3. ब	4. अ	5. ब

पाठ–14 समास [Compound]

(क)
1. परस्पर संबंध रखने वाले दो शब्दों का मेल समास कहलाता है।
2. जिस समस्त पद का पूर्व पद प्रधान तथा अव्यय हो, अव्ययीभाव समास कहलाता है।
3. जिस समास में पूर्व पद गौण एवं उत्तर पद प्रधान होता है और दोनों पदों के बीच कर्ता तथा संबोधन कारक को छोड़कर शेष कारकीय परसर्गों का लोप हो जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं; जैसे–अकालपीड़ित–अकाल से पीड़ित, वनवास–वन में वास।
4. जहाँ पूर्व पद तथा उत्तर पद के बीच उपमेय–उपमान या विशेष्य–विशेषण का संबंध हो, वहाँ कर्मधारय समास होता है।
5. जहाँ पूर्व तथा उत्तर दोनों ही पदों में से किसी की भी प्रधानता नहीं होती, वरन किसी अन्य पद की प्रधानता होती है, वहाँ बहुव्रीहि समास होता है।
6. कर्मधारय समास के दोनों पदों में उपमेय–उपमान अथवा विशेषण–विशेष्य का संबंध होता है, जबकि बहुव्रीहि समास के दोनों पद अप्रधान होते हुए किसी तीसरे अथवा विशेष अर्थ की ओर संकेत करते हैं;

   जैसे– महात्मा = महान + आत्मा – महान है जो आत्मा

   (विशेषण) (विशेष्य) (कर्मधारय समास)

महात्मा—महान है आत्मा जिसकी अर्थात विशेष व्यक्ति अथवा महात्मा गाँधी (बहुव्रीहि समास)

(ख)	1. देवों के लिए आलय	संप्रदान तत्पुरुष समास
	2. रोग से मुक्त	करण तत्पुरुष समास
	3. गृह में प्रवेश	अधिकरण तत्पुरुष समास
	4. युद्ध में स्थिर है जो	बहुव्रीहि समास
	5. आज्ञा के अनुसार	अव्ययीभाव समास
	6. नीला है जो कमल	करण तत्पुरुष समास
	7. रात ही रात में	अव्ययीभाव समास
	8. आशा को लाँघकर गया हुआ	कर्म तत्पुरुष समास
	9. पठन के लिए शाला	संप्रदान तत्पुरुष समास
	10. जीवन भर	अव्ययीभाव समास

(ग) 1. बहुव्रीहि 2. द्विगु 3. कर्मधारय 4. अव्ययीभाव

(घ) 1. कर्मधारय समास 2. द्विगु समास 3. बहुव्रीहि समास
4. द्वंद्व समास 5. अव्ययीभाव समास 6. तत्पुरुष समास

(ङ) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(च) 1. ब 2. अ 3. अ 4. स
5. स 6. ब

(छ) नीलकंठ – नीला है जो कंठ (कर्मधारय समास)
नीला है कंठ जिसका अर्थात शिव (बहुव्रीहि समास)
दशानन – दस हैं जिसके आनन (कर्मधारय समास)
दस आनन हैं जिसके अर्थात (रावण) (बहुव्रीहि समास)

पाठ–15 संज्ञा [Noun]

(क) 1. जिस शब्द से किसी वस्तु, प्राणी, स्थान या भाव के नाम का बोध होता है, उसे 'संज्ञा' कहते हैं। संज्ञा के तीन भेद हैं – व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा तथा भाववाचक संज्ञा।

2. किसी व्यक्ति विशेष, स्थान विशेष या वस्तु विशेष के नाम का बोध करवाने वाले शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाते हैं। उदाहरणार्थ– अमेरिका, नेल्सन मंडेला आदि। दूसरी ओर किसी प्राणी, पदार्थ या समुदाय की संपूर्ण जाति का बोध करवाने वाले संज्ञा शब्द जातिवाचक संज्ञा कहलाते हैं। उदाहरणार्थ–शहर, पेड़ आदि।

3. किसी गुण, कार्य, भाव, अवस्था, दशा आदि का बोध करवाने वाले शब्द भाववाचक संज्ञा कहलाते हैं। भाववाचक संज्ञा शब्दों का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय शब्दों से होता है।

4. जिन संज्ञा शब्दों से किसी पदार्थ या द्रव्य का बोध हो, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।

5. जिन संज्ञा शब्दों से किसी समूह अथवा समुदाय का बोध होता है, उन्हें समुदायवाचक संज्ञा कहते हैं।

(ख) आस्तिकता, स्वास्थ्य, कमाई, स्वामित्व, अहंकार, कठोरता, विद्वता, देवत्व, बुढ़ापा, भ्रातृत्व

(ग) 1. भाववाचक संज्ञा 2. जातिवाचक संज्ञा
3. भाववाचक संज्ञा 4. व्यक्तिवाचक संज्ञा
5. व्यक्तिवाचक संज्ञा

(घ) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗

(ङ) व्यक्तिवाचक संज्ञा – दिल्ली, श्रीमद्भागवत, महात्मा गाँधी
जातिवाचक संज्ञा – स्त्री, देश, आदमी
भाववाचक संज्ञा – मिठास, वीरता, बचपन
द्रव्यवाचक संज्ञा – सोना, दूध, लोहा, घी
समुदायवाचक संज्ञा – सेना, कक्षा, भीड़

(च) छात्र स्वयं करें।

(छ) 1. अ 2. स 3. ब 4. द

पाठ–16 संज्ञा विकारः लिंग [Gender]

(क) 1. स्वामिनी ने सेविका को कंबल दिया।
2. आचार्या ने शिष्या को उपदेश दिया।
3. शेरनी, मोरनी, मादा रीछ आदि जंगल में रहते हैं।
4. धोबिन ने कपड़े धोए।
5. सभी छात्राओं ने परीक्षा दी।

(ख)

मोती	– पुल्लिंग	पर्वत	– पुल्लिंग
हिंदी	– स्त्रीलिंग	सीपी	– स्त्रीलिंग
धूप	– स्त्रीलिंग	सूर्य	– पुल्लिंग
रोटी	– स्त्रीलिंग	धरती	– स्त्रीलिंग
सोमवार	– पुल्लिंग	घबराहट	– स्त्रीलिंग

(ग)

कवि	–	कवयित्री	पुत्र	–	पुत्री
हाथी	–	हथिनी	सेवक	–	सेविका
अध्यापक	–	अध्यापिका	सुत	–	सुता
बाल	–	बाला	ग्राहक	–	ग्राहिका
श्रीमान	–	श्रीमती	विधाता	–	विधात्री
पंडा	–	पंडाइन	देवर	–	देवरानी
पुरुष	–	स्त्री	पंडित	–	पंडिताइन
नर	–	नारी	सेठ	–	सेठानी
नाग	–	नागिन	दाता	–	दात्री

(घ)

गुड़िया	–	गुड्डा	मालकिन	–	मालिक
रानी	–	राजा	पत्नी	–	पति
भाभी	–	भाई	हंसिनी	–	हंस
रूपवती	–	रूपवान	सिंहनी	–	सिंह

विधवा	–	विधुर	सेठानी	–	सेठ
भीलनी	–	भील	राजकुमारी	–	राजकुमार
इंद्राणी	–	इंद्र	सर्पिणी	–	सर्प
योगिनी	–	योगी	ग्वालिन	–	ग्वाला
ठकुराइन	–	ठाकुर	बेटी	–	बेटा
दादी	–	दादा	मोरनी	–	मोर

(ङ) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗

(च) 1. द 2. द 3. स 4. ब

(छ) 1. अ 2. स 3. अ 4. स

पाठ–17 संज्ञा–विकार : वचन [Number]

(क) 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं।

2. वचन के दो भेद हैं–

एकवचन – भाषा, माला आदि।

बहुवचन – भाषाएँ, मालाएँ आदि।

3. वर्षा, पानी

4. आँसू, बाल

5. स्त्री जाति, राजनीतिक दल

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. एकवचन 2. बहुवचन 3. बहुवचन 4. एकवचन 5. बहुवचन

(घ) 1. पुस्तकें बिक रही हैं।

2. बाग में फूल खिला है।

3. पेड़ पर चिड़ियाँ बैठी हैं।

4. आँखों से पानी बहता है।

5. कवि कविताएँ लिखता है।

6. केले कच्चे हैं।

7. गुड़ियाँ टूट गई।

8. बच्चे खेलते हैं।

9. ऋषि यज्ञ करता है।

10. लड़कियाँ पढ़ रही हैं।

(ङ) 1. गाथाएँ 2. विधियाँ 3. मुरगे 4. दीवार 5. कथा
6. दरवाज़े 7. गौएँ 8. धेनुएँ 9. पंखे 10. रात
11. मित्रगण 12. नारियाँ

(च) 1. अ 2. ब 3. अ 4. अ 5. स

पाठ–18 संज्ञा–विकार : कारक [Case]

(क) 1. करण कारक 2. करण कारक 3. अपादान कारक 4. करण कारक
5. अपादान कारक 6. अपादान कारक 7. करण कारक 8. करण कारक

(ख)	1. से	2. से	3. से	4. की
	5. ने	6. पर	7. में	8. में
(ग)	1. कर्ता कारक	2. अधिकरण कारक	3. संबंध कारक	
	4. अधिकरण कारक	5. अधिकरण कारक	6. कर्म कारक	
	7. करण कारक	8. संबंध कारक		
(घ)	1. संप्रदान कारक	2. कर्म कारक	3. संप्रदान कारक	
	4. संप्रदान कारक	5. कर्म कारक	6. संप्रदान कारक	

(ङ) छात्र स्वयं करें।

(च) 1. अ 2. द 3. स 4. स 5. ब
6. स

पाठ–19 सर्वनाम [Pronoun]

(क) 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

2. पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हैं–
उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम – मैं, मेरा, हम आदि।
मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम – तुम, तुम्हारा, आप आदि।
अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम – वह, वे, उनका आदि।

3. व्याकरण में सर्वनाम की बहुत उपयोगिता है। सर्वनामों का प्रयोग संज्ञा शब्दों की पुनरावृत्ति को रोकता है तथा इनके प्रयोग से भाषा सुंदर तथा प्रभावशाली हो जाती है।

4. सर्वनाम के छह भेद हैं–
(i) पुरुषवाचक सर्वनाम – मैंने सारा काम कर लिया।
तुम कल कहाँ गए थे?
(ii) निश्चयवाचक सर्वनाम – शर्मा जी का घर यह है।
वह सामने वाला आफ़िस मेरा है।
(iii) अनिश्चयवाचक सर्वनाम – दरवाज़े पर कोई आया है।
दाल में कुछ काला है।
(iv) प्रश्नवाचक सर्वनाम – तुमने किसे बुलाया है?
भिखारी को क्या चाहिए?
(v) संबंधवाचक सर्वनाम – जो बोओगे, सो काटोगे।
जैसी करनी, वैसी भरनी।
(vi) निजवाचक सर्वनाम – मैं स्वयं ही खा लूँगा।
वह खुद तुम्हें उपहार देने आएगा।

5. निश्चित वस्तु या व्यक्ति की तरफ़ संकेत करने वाला सर्वनाम निश्चयवाचक सर्वनाम है।

6. 'मैं' का बहुवचन 'हम' है।

7. 'स्वयं' निजवाचक सर्वनाम का उदाहरण है।

(ख) 1. मैंने प्यार से पूछा, "अब तो तू खुश है न!"

2. आप चिंता न करें माँ, मैं हमेशा उसके साथ रहूँगी।

3. जब गलती होती है, तब आदमी को नाक रगड़नी पड़ती है।

4. उसने तुझे तस्वीरें दिखाई।

5. वत्स, यह तुमने कैसा वर माँगा?

(ग) 1. उसे 2. कोई, उसे 3. तुम्हें 4. स्वयं 5. वह

(घ) वह – पुरुषवाचक (अन्य पुरुष), कौन – प्रश्नवाचक,
जैसा-वैसा – संबंधवाचक, स्वयं – निजवाचक,
यह – निश्चयवाचक, कुछ – अनिश्चयवाचक,
मैं – पुरुषवाचक (उत्तम पुरुष)

(ङ) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(च) 1. पुरुषवाचक सर्वनाम 2. निजवाचक सर्वनाम
3. निजवाचक सर्वनाम 4. संबंधवाचक सर्वनाम
5. अनिश्चयवाचक सर्वनाम 6. निश्चयवाचक सर्वनाम
7. पुरुषवाचक सर्वनाम 8. पुरुषवाचक सर्वनाम

(छ) 1. तुम, वह और मैं दिल्ली जाएँगे। 2. मुझे चाय पीनी है।
3. दाल में कुछ गिर गया है। 4. तुम अपने घर जाओ।
5. उसको खाना खिला दो। 6. तुम्हें पिताजी ने बुलाया है।
7. मुझे आज विद्यालय जाना है। 8. तुम्हें कब समझ आएगी।

(ज) 1. दूसरा नाम मुझे मालूम नहीं।
2. कमरे में किसका सामान रखा है।
3. तुम किससे पूछकर यहाँ आए हो?
4. रुचि ने कुछ लिखा है या नहीं।
5. जिसकी लाठी उसकी भैंस।

पाठ-20 विशेषण [Adjective]

(क) 1. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

2. विशेषण के चार भेद हैं–
गुणवाचक विशेषण – नीला घोड़ा दौड़ रहा है।
संख्यावाचक विशेषण – सरकस में चार बंदर नाचे।
परिमाणवाचक विशेषण – थोड़ा मक्खन खा लीजिए।
संकेतवाचक/सार्वनामिक विशेषण – यह मेरा घर है।

(ख) 1. दस – संख्यावाचक 2. पाँचवाँ – संख्यावाचक
3. थोड़ा – अनिश्चित परिमाणवाचक 4. थोड़ा – अनिश्चित परिमाणवाचक
5. सैकड़ों – अनिश्चित संख्यावाचक

(ग) **विशेषण** **विशेष्य**

1.	सफ़ेद	हाथी
2.	पीले	वस्त्र
3.	ओजस्वी	भाषा
4.	नीला/नीले	आकाश
5.	पाँच किलो	दूध

(घ) **विशेषण** **प्रविशेषण**

1.	नीला	गहरा
2.	हिंसक	बहुत
3.	सुंदर	अति
4.	परिश्रमी	बहुत
5.	हरा	गहरा

(ङ)

1.	रंग-बिरंगे	गुणवाचक विशेषण
2.	पाँच लीटर	निश्चित परिमाणवाचक विशेषण
3.	सुंदर	गुणवाचक विशेषण
4.	जंगली	गुणवाचक विशेषण
5.	लाल	गुणवाचक विशेषण
6.	कुछ	अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण
7.	सफ़ेद	गुणवाचक विशेषण

(च) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓
5. ✓ 6. ✓

(छ) आंशिक, आयुष्मान, श्रद्धालु, अध्ययनशील, ऐतिहासिक, तपस्वी, आर्थिक, कुलीन, ओजस्वी, ईश्वरीय

(ज)

1.	गुरु	गुरुतर	गुरुतम
2.	लघु	लघुतर	लघुतम
3.	नीच	नीचतर	नीचतम
4.	न्यून	न्यूनतर	न्यूनतम
5.	बृहत	बृहत्तर	बृहत्तम
6.	उच्च	उच्चतर	उच्चतम

(झ) **सर्वनाम** **सर्वनामिक विशेषण**

1.	इन	इन्हें
2.	कुछ	कुछ
3.	क्या	क्या
4.	यह	यह
5.	कुछ	कुछ

(ण) 1. ब 2. स 3. अ 4. द 5. अ

पाठ-21 क्रिया [Verb]

(क) 1. जो शब्द किसी कार्य के करने, घटित होने या किसी स्थिति का बोध करवाते हों, उन्हें क्रिया कहते हैं।

2. क्रिया का मूल रूप धातु कहलाता है।

3. जो क्रिया दो या दो से अधिक धातुओं के मेल से बनती है, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं।

4. वह क्रिया जिसके व्यापार का फल कर्म पर पड़ता है तथा जिसमें कर्म की आवश्यकता होती है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

5. कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं–

अकर्मक क्रिया – यह कर्म रहित क्रिया होती है।
जैसे – रमा पार्क में घूमती है।

सकर्मक क्रिया – यह कर्म सहित क्रिया होती है।
जैसे – छात्र परीक्षा देते हैं।

6. जब वाक्य में एक ही क्रिया का प्रयोग होता है, उसे सामान्य क्रिया कहते हैं।

7. संरचना के आधार पर क्रिया के पाँच भेद हैं–
सामान्य क्रिया, संयुक्त क्रिया, नामधातु क्रिया, पूर्वकालिक क्रिया तथा प्रेरणार्थक क्रिया।

8. जिस क्रिया के द्वारा यह बोध होता है कि कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य को कार्य करने की प्रेरणा देता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं; जैसे– सेठ जी ने नौकरों से बोरियाँ उठवाईं।

(ख) 1. सकर्मक 2. सकर्मक 3. सकर्मक 4. अकर्मक
5. अकर्मक 6. अकर्मक 7. अकर्मक 8. सकर्मक

(ग) रँगना, चिकनाना, हथियाना, लजाना, अपनाना, फ़िल्माना, गरमाना, महकाना, ललचाना, दुखाना।

(घ) उड़वाना, चलवाना, पढ़वाना, बनवाना, रुलवाना, नचवाना, जगवाना, खिलवाना, सुलवाना, पिलवाना, खिलवाना, मिटवाना।

(ङ) 1. गिरना, चलना
2. बतियाना, शर्माना
3. चला गया, पढ़ लिया
4. उठवाना, चलवाना
5. पढ़कर, सोकर

(च) 1. माँ खाना देकर चली गई।
2. वह गाना सुनकर सो गया।
3. उसने मुझे देखकर अनदेखा कर दिया।

(छ) 1. करने लगे।
2. शिक्षक विद्यार्थी से पढ़वाता है।
3. माता जी ने नेहा को सुलाया।
4. सकर्मक क्रिया

पाठ–22 काल [Tense]

(क) 1. क्रिया के करने या होने के समय की सूचना देने वाला रूप काल कहलाता है।
2. काल के तीन भेद हैं–
भूतकाल, वर्तमान काल, भविष्यत् काल।
3. वर्तमान काल चल रहे समय का बोध कराता है। इसके तीन भेद हैं–सामान्य वर्तमान काल, संदिग्ध वर्तमान काल, अपूर्ण वर्तमान काल।
4. राधिका नाच रही है।
5. बीते हुए समय का बोध करवाने वाले क्रिया रूप को भूतकाल कहते हैं।
6. क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य वर्तमान काल में आरंभ होकर अभी जारी है, उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते हैं।
7. क्रिया के जिस रूप से भविष्यत् काल में किसी कार्य के होने में संदेह पाया जाए, उसे संभाव्य भविष्यत् काल कहते हैं।
8. ये क्रियाएँ भविष्यत् काल की सूचना देती हैं।

(ख) छात्र स्वयं करें।

(ग) 1. लौटा 2. सो रहे 3. पूछा, कर 4. आएगा 5. उतरा

(घ) 1. वह गृहकार्य कर रहा था।
2. हम सभी कल पिकनिक मनाने जाएँगे।
3. चिड़ियाँ चहचहा रही हैं।
4. पक्षी घोंसलों में सो रहे होंगे।
5. शायद गीतकार गीत लिखेगा।

(ङ) 1. अपूर्ण भूत 2. संदिग्ध भूत 3. सामान्य भूत
4. आसन्न भूत 5. हेतु-हेतुमद् भूत

(च) 1. अपूर्ण वर्तमान काल 2. सामान्य भविष्यत् काल 3. पूर्ण भूतकाल
4. संदिग्ध वर्तमान काल 5. संदिग्ध वर्तमान काल

(छ) 1. अ 2. ब 3. ब 4. स 5. अ

पाठ–23 वाच्य [Voice]

(क) 1. भारत ने नया उपग्रह छोड़ा।
2. हमसे आज रात नहीं ठहरा जाएगा।
3. वाणी ने कहानी सुनाई।
4. अध्यापक द्वारा विद्यार्थियों को पढ़ाया गया।
5. मुझसे गाया नहीं जाता।
6. मेरे द्वारा अखबार पढ़ा गया।
7. तुम्हारे द्वारा फूल तोड़ा गया।

(ख) 1. कर्तृवाच्य 2. कर्तृवाच्य 3. कर्मवाच्य 4. कर्तृवाच्य
5. कर्मवाच्य 6. कर्तृवाच्य

(ग) 1. उन्होंने पत्र लिखा।
2. अध्यापिका ने गणित समझाया।
3. मैं प्रतिदिन व्यायाम करता हूँ।
4. मदारी ने तमाशा दिखाया।
5. कवि ने कविता सुनाई।

(घ) 1. बच्चे द्‌वारा रोया जाता है।
2. बच्चे से बोला नहीं जाता।
3. मुझसे अब सोया जाएगा।
4. राधिका द्‌वारा हँसा जाएगा।
5. हमसे चला नहीं जा सकता।

(ङ) 1. भाववाच्य 2. कर्मवाच्य 3. कर्तृवाच्य 4. भाववाच्य 5. कर्तृवाच्य

(च) 1. कर्तृवाच्य 2. कर्मवाच्य 3. भाववाच्य

पाठ-24 अविकारी शब्द (अव्यय) [Indeclinable Words]

1. क्रियाविशेषण

(क) 1. क्रिया की विशेषता का बोध कराने वाले अविकारी शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं; जैसे–रवि दिनभर खेलता रहा।
2. जो क्रियाविशेषण क्रिया होने के स्थान या दिशा का बोध करवाते हैं, उन्हें स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।
3. जो क्रियाविशेषण क्रिया के होने की रीति का बोध करवाते हों, उन्हें रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे–नीरज तेज़ चलता है।
4. जो क्रियाविशेषण दूसरे शब्दों में प्रत्यय लगाए बिना ही अपने मूल रूप में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें मूल क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे–पास, हमेशा, निकट, अचानक, कल, परसों आदि।
5. कालवाचक क्रियाविशेषण के अंतर्गत आते हैं।
6. क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रियाविशेषण हैं, और संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं; जैसे–
मोनिका सुंदर है।– विशेषण
मोनिका सुंदर लिखती है।– क्रियाविशेषण

(ख) 1. <u>ज़ोर-ज़ोर</u> रीतिवाचक क्रियाविशेषण
2. <u>कम</u> परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
3. <u>तेज़</u> रीतिवाचक क्रियाविशेषण
4. <u>चुपके-चुपके</u> यौगिक क्रियाविशेषण
5. <u>विनयपूर्वक</u> रीतिवाचक क्रियाविशेषण

(ग) 1. ब 2. द 3. अ 4. स

(घ) 1. ऊपर – मोहन ऊपर बैठा है।
2. फ़ौरन – तुम फ़ौरन घर चले जाओ।
3. भीतर – घर के भीतर कोई बैठा है।

4. हमेशा – रवि हमेशा लड़ता-झगड़ता रहता है।
5. लगातार – मज़दूर लगातार काम कर रहा है।

2. संबंधबोधक

(क) 1. वे अविकारी शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम के साथ जुड़कर वाक्य के अन्य पदों के साथ उनका संबंध बताएँ, संबंधबोधक कहलाते हैं।
2. व्युत्पत्ति के आधार पर संबंधबोधक के दो भेद हैं–मूल और यौगिक।
3. कुछ शब्द संबंधबोधक और क्रियाविशेषण दोनों रूपों में प्रयुक्त होते हैं। जब संज्ञा या सर्वनाम के साथ आकर उनका संबंध वाक्य के अन्य पदों के साथ बताते हैं तो संबंधबोधक और जब क्रिया की विशेषता बताते हैं, तो क्रियाविशेषण कहलाते हैं; जैसे–
मज़दूर पेड़ के नीचे लेटा है। (संबंधबोधक)
मज़दूर नीचे लेटा है। (क्रियाविशेषण)

(ख) 1. मेरे घर के सामने पेड़ है।
2. रानी के पास सोने का हार है।
3. माँ घर के भीतर सो रही है।
4. तुम राम की तरह माता-पिता का नाम रोशन करना।

(ग)	1. के पीछे	2. के अंदर	3. के बीच	4. के नीचे	5. के सहारे
(घ)	1. के बिना	2. से बाहर	3. के समक्ष	4. के कारण	5. की ओर
(ङ)	1. अ	2. ब	3. स	4. स	5. स

3. समुच्चयबोधक

(क) तो, या, भी, और, तो, तो, बल्कि

(ख) 1. बल्कि – विरोधसूचक समानाधिकरण समुच्चयबोधक
2. यदि, तो – संकेतसूचक व्यधिकरण समुच्चयबोधक
3. और – संयोजक समानाधिकरण समुच्चयबोधक
4. यदि, तो – संकेतसूचक व्यधिकरण समुच्चयबोधक
5. तो – संकेतसूचक व्यधिकरण समुच्चयबोधक
6. किंतु – विरोधसूचक समानाधिकरण समुच्चयबोधक
7. तो – संकेतसूचक व्यधिकरण समुच्चयबोधक

(ग) 1. और – दादी और पोती दोनों हँस रही हैं।
2. कि – मुझे लगा कि चिड़िया जरूर मर जाएगी।
3. अर्थात – सत्यमेव जयते अर्थात सत्य की सदैव जीत होती है।
4. अतएव – सब हलवाई मुंशी जी को पहचानते थे, अतएव मुंशी जी ने सिर झुका लिया।
5. अथवा – इस दिन गणेश कथा सुनने अथवा पढ़ने का विशेष महत्व माना गया है।

(घ) समानाधिकरण – या, और, तथा, एवं, किंतु, अन्यथा, इसलिए, अन्यथा, चाहे
व्यधिकरण – क्योंकि, जिससे, कि, यद्यपि, ताकि, तथापि, अर्थात, चूँकि

(ङ)	1. स	2. द	3. ब	4. द	5. ब

4. विस्मयादिबोधक

(क) 1. वाह! कितना सुंदर घर है।
2. हाय! वह गिर पड़ी।
3. छि:! कितनी गंदगी है।
4. बाप रे! कितनी ऊँची इमारत है।

(ख) 1. हाय!–शोकबोधक 2. छि:!–घृणाबोधक 3. अरे मन!–संबोधनबोधक
4. अरे!–विस्मयादिबोधक 5. वाह!–हर्षबोधक 6. अच्छा!–स्वीकृतिबोधक
7. हे ईश्वर!–संबोधनबोधक

(ग) 1. सावधान! 2. राम-राम! 3. बाप रे बाप! 4. वाह! 5. अच्छा!
6. अरे! 7. हाय! 8. उफ़! 9. हाँ-हाँ! 10. खबरदार!

(घ) 1. द 2. ब 3. ब 4. द 5. द

5. निपात

(क) 1. निपात वाक्य के भिन्न-भिन्न पदों के साथ आकर वाक्य के अर्थ को प्रभावित करते हैं। ये सहायक शब्द होकर भी वाक्य के अंग नहीं माने जाते। इनमें कोई लिंग, वचन नहीं होता; जैसे–तुम भी राहुल को घर बुला लो।
2. जो अविकारी शब्द वाक्य में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण या क्रियाविशेषण के साथ बल देने के लिए लगाए जाते हैं, उन्हें निपात कहते हैं।

(ख) 1. हम केवल पाँच लोग ही घूमने जाएँगे।
2. राम कल नहीं आ रहा है।
3. हाँ, हम भी तुम्हारे साथ चलेंगे।
4. उससे बिल्कुल भी काम मत करवाना।
5. वह आया तो मैं बिलकुल नहीं आऊँगा।

(ग) 1. ही 2. सिर्फ़ 3. तक 4. भी 5. तक

(घ) 1. अ 2. अ 3. ब 4. अ

पाठ-25 पद-परिचय [Parsing]

(क) 1. निकिता– व्यक्तिवाचक संज्ञा; और– समानाधिकरण समुच्चयबोधक का भेद–संयोजक
2. बूढ़ी गायें– गायों (जातिवाचक संज्ञा) की विशेषता बताता शब्द; बूढ़ी–गुणवाचक विशेषण
3. हाय!– (विस्मयादिबोधक शब्द) शोकबोधक
4. आ गया– अकर्मक क्रिया, एकवचन, पुल्लिंग।
5. दौड़कर– रीतिवाचक क्रियाविशेषण ; किंतु– विरोधसूचक समुच्चयबोधक
6. तू– मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन
7. व्यक्तिवाचक संज्ञा ; ज्ञान-पुल्लिंग
8. मज़दूर– जातिवाचक संज्ञा ; किंतु– विरोधसूचक समुच्चयबोधक ; के अनुसार–संबंधबोधक

पाठ-26 वाक्य-विचार [Syntax]

(क) 1. जो शब्द-समूह सार्थक है, व्याकरणिक नियमानुसार व्यवस्थित है और अपना पूर्ण आशय स्पष्ट करने में समर्थ है, उसे वाक्य कहते हैं। अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं– विधानवाचक, निषेधवाचक, प्रश्नवाचक, संदेहवाचक, विस्मयादिबोधक, इच्छावाचक, आज्ञावाचक, संकेतवाचक। वहीं रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं– सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य तथा मिश्रित वाक्य।

2. अर्थ की दृष्टि से वाक्य के छह अनिवार्य तत्व हैं– सार्थकता, अविच्छिन्नता, योग्यता, पूर्णता, मेल, पदक्रम।

3. जिस वाक्य में एक ही उद्देश्य तथा एक ही विधेय होता है, उसे सरल वाक्य कहते हैं।

4. एक वाक्य में कई उपवाक्य होते हैं। इन उपवाक्यों में जो वाक्य का केंद्र होता है, उसे मुख्य या प्रधान वाक्य कहते हैं और शेष उपवाक्य आश्रित उपवाक्य कहलाते हैं। आश्रित उपवाक्य के तीन भेद हैं– संज्ञा उपवाक्य, विशेषण उपवाक्य, क्रियाविशेषण उपवाक्य।

5. प्रधान उपवाक्य की क्रिया की विशेषता बताने वाले आश्रित उपवाक्य को क्रियाविशेषण उपवाक्य कहा जाता है।

6. जिस वाक्य से किसी कार्य के होने में संदेह का बोध हो, उसे संदेहवाचक वाक्य कहते हैं।

(ख) 1. परिश्रमी व्यक्ति मेहनत करता है इसलिए उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं है।

2. उसने सरदी लगने पर दवा ली।

3. जब अमन ने हरी मिर्च खाई, तब उसे हिचकी आने लगी।

(ग) 1. मिश्रित वाक्य 2. संयुक्त वाक्य 3. सरल वाक्य
4. मिश्रित वाक्य 5. संयुक्त वाक्य 6. सरल वाक्य
7. संयुक्त वाक्य

(घ)

1.	गाँव में	(उद्देश्य)	सूखा पड़ गया।	(विधेय)
2.	सेठ जी ने	(उद्देश्य)	पालकी रोकने के लिए कहा।	(विधेय)
3.	पिंकी ने	(उद्देश्य)	कुछ फल खरीदे।	(विधेय)
4.	मज़दूरों की	(उद्देश्य)	बरात सड़क पर जा रही थी।	(विधेय)

(ङ) 1. विस्मयादिबोधक वाक्य 2. आज्ञावाचक वाक्य 3. इच्छावाचक वाक्य
4. विधानवाचक वाक्य 5. संकेतवाचक वाक्य

(च) 1. ईश्वर आपको सफलता प्रदान करें।

2. अरे! कितना सुंदर दृश्य है।

3. वह नहीं आएगा।

4. मोहन ने आपकी बात मान ली है।

(छ) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗
5. ✓ 6. ✓

(ज) 1. स 2. द 3. अ 4. स 5. ब

पाठ–27 पदक्रम तथा अन्वय [Concord]

(क)	1. ✗	2. ✗	3. ✗	4. ✗	5. ✓
	6. ✗	7. ✓	8. ✗	9. ✗	10. ✗

(ख)
1. महादेवी वर्मा विदुषी थीं।
2. गाय का दूध ताकतवर होता है।
3. आपके पिता जी बुला रहे हैं।
4. मुझसे अनजाने में भूल हो गई।
5. वे पढ़ते हैं।
6. प्रधानमंत्री भाषण देते हैं।
7. तुम अपना काम करो।
8. उसने फूलों की एक माला बनाई।
9. मैं गुनगुने पानी से नहाता हूँ।
10. मैं आपके दर्शन करना चाहता हूँ।
11. उसके प्राण-पखेरू उड़ गए।
12. हमने यह फ़िल्म देखी थी।
13. मुझे गृहकार्य करना है।
14. उसके दो चाचा हैं।
15. उस पर घड़ों पानी पड़ गया।

(ग)	1. गई	2. दीन	3. उसकी	4. देखने योग्य
	5. संभवत!	6. लोग	7. रखता	8. मत

पाठ–28 विराम-चिह्न [Punctuation]

(क)	1. ०	2. ?	3. ,	4. !	5. ‘‘ ’’ ‘ ’
(ख)	1. ✗	2. ✗	3. ✗	4. ✓	5. ✓
	6. ✗	7. ✓			

(ग)
1. नचिकेता बार-बार पूछता– ‘‘आप मुझे किसको दक्षिणा में दे रहे हैं?’’
2. बूढ़ा बोला– ‘‘मैं चल नहीं पा रहा हूँ।’’
3. मेरे मन, निराश होने की ज़रूरत नहीं है।
4. अरे! तुम कब आए?
5. ‘‘खाना-वाना हो गया’’- उन्होंने पूछा।
6. वह खीझकर बोला, ‘‘क्यों हट जाऊँ? सड़क सिर्फ़ तुम्हारी ही नहीं है।’’
7. मैडम, आप तो लिखती हैं। मेरी कविताएँ देखिए, कुछ दम है क्या इनमें।
8. पत्नी बोली– ‘‘तुम्हारी बुद्धि घास चरने गई है।’’

पाठ–29 अलंकार [Decoration]

(क)
1. शब्दों अथवा अर्थों के चमत्कारपूर्ण आकर्षक प्रयोग को अलंकार कहते हैं।
2. मुदित महीपति मंदिर आए।

3. काव्य में जहाँ कोई शब्द एक ही बार प्रयुक्त हो, लेकिन वह एक से अधिक अर्थ दे, वहाँ श्लेष अलंकार होता है।
4. अत्यधिक समानता के कारण जहाँ किसी भी व्यक्ति अथवा वस्तु की तुलना किसी दूसरे प्रसिद्ध व्यक्ति अथवा वस्तु से की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है। जैसे– संत हृदय नवनीत समाना।
   उपमा अलंकार के चार अंग होते हैं– उपमेय, उपमान, वाचक, साधारण धर्म।
5. काव्य में जहाँ अत्यधिक समानता के कारण उपमेय में उपमान को आरोपित किया जाता है, वहाँ रूपक अलंकार होता है; जैसे– मैया मैं तो चंद्र-खिलौना लैहों। वहीं काव्य में जहाँ उपमेय और उपमान में भिन्नता होने के बाद भी समानता की संभावना की जाए, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है; जैसे– हरि मुख मानो मधुर मयंक।

(ख) 1. यमक अलंकार 2. उत्प्रेक्षा अलंकार 3. अनुप्रास अलंकार
4. यमक अलंकार 5. श्लेष अलंकार 6. उपमा अलंकार
7. यमक अलंकार 8. श्लेष अलंकार 9. अनुप्रास अलंकार

(ग) 1. स 2. ब 3. द 4. द 5. अ

पाठ–30 मुहावरे, लोकोक्तियाँ तथा सूक्तियाँ

[Idioms and Proverbs]

(क) 1. साधारण अर्थ छोड़कर विशिष्ट अर्थ प्रकट करने वाले वाक्यांश मुहावरे कहलाते हैं। वहीं लोगों के अनुभव के आधार पर कही गई उक्तियाँ लोकोक्ति कहलाती हैं। मुहावरा वाक्य का अंश होता है जबकि लोकोक्ति पूरा वाक्य होती है।
2. विचार मंथन के बाद सारगर्भित शब्दावली में कहे गए किसी सुगठित कथन को सूक्ति कहते हैं।

(ख) 1. खीर 2. की खानी पड़ी 3. दिखाकर भागना
4. में पानी आ गया 5. पीले हो गए 6. अक्षर भैंस बराबर है।
7. दो ग्यारह हो गया 8. की बाजी लगा दें 9. गगरी छलकत जाए।

(ग) चाँदी होना– बहुत लाभ होना, गले का हार– अत्यंत प्रिय
अंधे की लकड़ी– एकमात्र सहारा, अगर-मगर करना– टाल-मटोल करना
कीचड़ उछालना– बदनामी करना।

(घ) 1. (काम से जी चुराने वाला ही भाग्य की दुहाई देता है।) कर्मवीर सफ़लता की सीढ़ी चढ़ता जाता है, मगर आलसी भाग्य पर भरोसा करके बैठा रहता है और समय निकलने पर पछताता है। ऐसे ही लोगों के लिए कहा जाता है– दैव-दैव आलसी पुकारा।
2. (अच्छे व्यक्ति को संसार का प्रत्येक व्यक्ति अच्छा ही लगता है।) सोमा बुआ को मुहल्ले भर के लोगों में से किसी में बुराई नज़र नहीं आती, चाहे कोई कितना भी दुष्ट क्यों न हो। सच कहा गया है– आप भले तो जग भला।
3. (पराधीन व्यक्ति कभी सुखी नहीं रह सकता)– अंग्रेज़ी सत्ता से मुक्ति हेतु देशभक्तों ने अपने प्राणों की बाजी लगा दी, क्योंकि वे जानते थे– पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।

4. (विपरीत कार्य करना)– लोग निर्धनों की मदद करते हैं। तुम उन्हीं से चंदा माँगकर क्यों उलटी गंगा बहा रहे हो?
5. (कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है।)– रिश्वत लेकर लाखों रुपया जोड़कर रामलाल अब तक ऐश करता रहा। अब पकड़ा गया, तो जेल में सड़ना ही होगा। इसे कहते हैं– जैसी करनी वैसी भरनी।
6. (निश्चिंत होना)– बरात के विदा होने पर वधू पक्ष के लोग घोड़े बेचकर सो गए।
7. (पक्की बात)– संतों के वचन पत्थर की लकीर होते हैं।

(ङ)(i)	1. ब	2. स	3. स	4. स	
(ii)	1. ब	2. स	3. स	4. द	5. ब

पाठ–31 रचनात्मक गतिविधियाँ [Creative Activities]

विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ–32 अपठित गद्यांश [Unseen Prose Passages]

1.	1. स	2. द	3. द	4. अ	5. अ
2.	1. ब	2. अ	3. अ	4. अ	5. ब
3.	1. द	2. द	3. द	4. स	5. ब
4.	1. ब	2. ब	3. ब	4. ब	5. द
5.	1. द	2. द	3. ब	4. स	5. अ

पाठ–33 अपठित पद्यांश [Unseen Poem Passages]

1.	1. द	2. अ			
2.	1. ब	2. स	3. स	4. द	5. द
3.	1. द	2. ब	3. स	4. द	5. ब
4.	1. ब	2. स	3. द	4. अ	5. स
5.	1. स	2. द	3. स	4. द	5. द

पाठ–34 संवाद-लेखन [Dialogue Writing]

विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ–35 विज्ञापन-रचना [Advertisement Making]

विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ–36 पत्र-लेखन [Letter Writing]

विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ–37 अनुच्छेद-लेखन [Paragraph Writing]

विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ–38 निबंध-लेखन [Essay Writing]

विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ–39 सार–लेखन [Summary Writing]

विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ–40 ई–मेल [E-Mail]

विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ–41 ई–समाचार [E-Newspaper]

विद्यार्थी स्वयं करें।

अभ्यास प्रश्न–पत्र–1

विद्यार्थी स्वयं करें।

अभ्यास प्रश्न–पत्र–2

विद्यार्थी स्वयं करें।